दिन की शुरुआत

सुरेन्द्र कुन्तल

हर सुबह 40 मिनट की अवधि के लिए हम सब अनौपचारिक रूप से एक जगह इकट्ठा होते हैं और इस सभा को दिन की शुरुआत का नाम दिया गया है। सुबह हम सब स्कूल के आँगन में एक गोलाकार समूह बना लेते हैं। फिर हम एक–एक करके गिनना शुरू करते हैं। इस सभा का प्रयोग दिन भर की गतिविधियों के लिए जिम्मेदार शिक्षक द्वारा किया जाता है।

इसका नाम दिन की शुरुआत क्यों रखा गया?

जुलाई के महीने में (सत्र आरम्भ होने पर) हमने देखा कि बच्चे अपने अधिगम स्तर के विभिन्न स्तरों पर हैं। विद्यार्थी नए थे और उनमें से अधिकांश कभी स्कूल भी नहीं गए थे क्योंकि या तो उन्होंने स्कूल छोड़ दिया था और या कभी नामांकन कराया ही नहीं था। हमें भी उनके साथ जरा असहजता का अनुभव हो रहा था क्योंकि हमने इतने सारे छोटे बच्चों को नहीं पढ़ाया था।

चूँकि बच्चे स्कूल में बहुत सारी ऊर्जा के साथ आते हैं, इसलिए हमने सोचा कि उसका उपयोग सकारात्मक रूप से किया जाए। सभी शिक्षक "शुरुआत" में भाग लेते थे तो हमें लगा कि उनके साथ जुड़ना भी आसान रहेगा। हमने सोचा कि हटकर कुछ किया जाए और इसलिए हमने विषयों के बारे में खोज शुरू कर दी। अब क्योंकि स्कूल में यह गतिविधि स्कूल में सबसे पहले की जानी थी इसलिए इसका नाम दिन की शुरुआत रखा गया।

हमारे उद्देश्य

- सम्बन्ध स्थापित करना
- आत्मविश्वास का विकास करना
- प्रेरणा देना एवं आत्म–अभिव्यक्ति के लिए मंच प्रदान करना
- यह प्रयोग करना कि क्या वे मिल–जुलकर, खेलों के माध्यम से आनन्दपूर्वक सीख पाते हैं
- बहु–कक्षा एवं बहु–स्तर वाले बच्चों के साथ काम करना सीखना

प्रारूप

यह निर्णय लिया गया कि स्कूल के शुरू होते ही, अधिगम को बढ़ाने की दृष्टि से, हर शिक्षक अपने विषय के उपयुक्त कविता या गतिविधि को पेश करेंगे। इसकी अवधि भी दिन की शुरुआत में 40 मिनटों के लिए तय की गई। इसे एक निश्चित समय–सारणी के अनुसार किया गया था।

विषयों से सम्बन्धित प्रक्रियाएँ

भाषा : हमने अभिनय–गीत और कविताओं से शुरुआत की जिन्हें पहले शिक्षकों ने गाकर पेश किया। बाद में बच्चों ने उन्हे सीखा और बारी–बारी से गायन का नेतृत्व किया। नए शब्दों से बच्चों को परिचित कराने के लिए ये

- कॉलीफ्लॉवरः जब मध्याह्न भोजन परोसा गया तो प्रवीण नामक एक बालक ने कहा, " वाह! आज तो कॉलीफ्लॉवर की सब्जी बनी है। "
- हिन्दी में पहेली हल करनाः सभा में पहेली पर आधारित एक कविता का पाठ किया गया। उसे हल करने के लिए विद्यार्थियों ने जोड़ और घटाने की मूल संक्रिया का प्रयोग किया। सारे बच्चे आँगन में जमीन पर बैठकर इसे हल करने में व्यस्त थे।
- नियम की चिन्ता न की जाएः जब एक विद्यार्थी से पूछा गया कि क्या उसने खेल के नियमों को समझ लिया है तो उसने कहा," पता है, हॉप अ लिटल करके जाना है!"

शब्द गानों, कविताओं या बच्चों के आसपास के वातावरण से लिए गए ताकि वे अपने को उनसे जुड़ा हुआ महसूस करें और उनका उपयोग अपने दैनिक जीवन में कर सकें। बच्चों ने मिल–जुलकर बारी–बारी से गीतों व कविताओं को गाने में बहुत रुचि दिखाई और दूसरों का नेतृत्व करते समय तो उन्हें बहुत खुशी हुई। शरीर के अंगों, रंगों, फलों, सब्जियों, पशुओं, दिनों व महीनों के नाम, अँग्रेजी और हिन्दी की वर्णमाला आदि खेलों के माध्यम से सिखाए गए। चार्ट पर गाने व कविताएँ लिखकर उन्हें दीवारों पर चिपकाया गया। सिखाए हुए शब्द भी लिखकर दीवार पर चिपका दिए गए ताकि बच्चे उन्हें पढ़ सकें और उन्हें अपनी पुस्तिका में लिख सकें।

गणित: जब बच्चे एक गोले में इकट्ठा हुए तो पहले उन्होंने ही गिनती की। बाद में गतिविधियों को विभिन्न अवधारणाओं के साथ जोड़ते हुए उन्हें खेल के रूप में करवाया गया। खेल–खेल में ही बच्चों का समूहीकरण सम और विषम संख्या के आधार पर किया गया और फिर हॉपस्कॉच (कूदने वाला खेल) तथा गिलास को गेंद से मारने का खेल खिलाया गया। बच्चों ने अपनी पहचान के लिए दी गई संख्याओं को लिखा, पंजीकृत किया और बाद में जोड़ और घटाने की मूल संक्रिया का प्रयोग किया। अन्तराल से गिनने के द्वारा गुणा का परिचय कराया गया।

गणित के साथ मनोरंजन: बच्चों ने कबड्डी खेली। इसके लिए उन्हें समूह में बाँटा गया। आखिरी चक्र में उन्होंने खुद ही यह गिनती की कि टीम में कितने खिलाड़ी सुरक्षित हैं। इसके बाद "से अधिक (>)", "से कम (<)" एवं "बराबर (=)" के प्रतीक चिह्नों से बच्चों का परिचय कराया गया।

दीवारों का प्रयोग: एक गाने के माध्यम से महीनों के बारे में सीखने के बाद बच्चों ने DD/MM/YYYY प्रारूप में तारीख लिखी। दीवार पर महीनों वाले कैलण्डर को लिख दिया गया था ताकि उसकी मदद से बच्चे तारीख व दिनों को पहचान सकें। बच्चों द्वारा सीखकर लिखे गए शब्दों, कविताओं, गानों, दिनों व चार दिशाओं के नाम आदि को दीवार पर प्रदर्शित किया गया। विद्यार्थियों के नाम, अँग्रेजी और हिन्दी की वर्णमालाएँ आदि को भी खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा लिखा गया।

दिशा: दिशाओं के बारे में जानने के विषय से भी बच्चों को परिचित कराया गया। अधिकांश बच्चे यह जानते थे कि सूरज किस दिशा से उगता है। इसके आधार पर हमने दिशाओं के नाम सीखने की गतिविधियाँ कीं। बच्चे जिस दिशा से स्कूल आते हैं और उनका घर स्कूल से जिस दिशा की ओर है – उसके आधार पर हमने बच्चों के समूह बनाए।

कैलण्डर: इस थीम में दिनों व महीनों के नाम शामिल किए गए। महीनों के नाम का परिचय एक गाने के माध्यम से और कार्ड पर महीनों के नाम लिखकर कराया गया। बाद में बच्चों ने कार्डों को उपयुक्त क्रमानुसार रखा। तब तक बच्चे 30 तक की क्रमानुसार गिनती करना सीख चुके थे और एक से 30 तक की संख्या वाले कार्डों को जमाना जानते थे। वे श्यामपट्ट पर DD/MM/YYYY प्रारूप में तारीख भी लिखने लगे थे। सभी बच्चों को ऐसा करना बहुत रुचिकर लगा।

तराजू: स्कूल के आँगन के एक कोने में तराजू रखा हुआ है। शुरू–शुरू में तो यह टूट ही गया क्योंकि बहुत सारे बच्चे चीजों को तौलने वाले प्रयोग कर रहे थे और यह जानना चाह रहे थे कि तराजू की सुई कैसे हिलती–डुलती है। अब यह तराजू स्थायी रूप से जमाकर रख दिया गया है और बच्चे ईंटों से लगाकर मिट्टी, लकड़ी और पौधे तक को इसमें तौलते हैं। इसका प्रयोग गणित और पर्यावरण अध्ययन के लिए किया जाता है।

सूरज की किरणों का अंकन: सूरज की किरणें हमारे आँगन में एक निश्चित कोण में आकर पड़ती थीं, तो हमने उसे अंकित करने का निर्णय लिया। ऐसा हमने दो दिन में एक बार करना शुरू किया और कोण में अंकित विक्षेपण

देखा। ऐसा करके बच्चे बेहद उत्साहित हुए और अन्त में हमने ग्लोब का प्रयोग किया ताकि पृथ्वी की परिक्रमा को समझकर मौसम के बारे में जाना जा सके। अधिकांश बड़े बच्चों को यह पता चल गया कि गर्मी के मौसम में बहुत गर्मी और सर्दी के मौसम में सर्दी क्यों पड़ती है और पृथ्वी पर सूरज की किरणों के पड़ने का क्या प्रभाव पड़ता है।

घड़ी गतिविधिः हमने एक घड़ी ली और उसे खोला, उसका काँच हटाया और सेकण्ड वाली सुई भी निकाल दी। मिनट वाली सुई 12 पर रखी और समय पूछने–बताने की गतिविधि शुरू की। जो बच्चे अंकों को अच्छी तरह से पहचानते थे वे सही समय बताने लगे। फिर हमने मिनट वाली सुई से परिचित कराया। कुछ को यह विचार मुश्किल लगा क्योंकि इसमें पहाड़े की जरूरत पड़ती थी। हमने बच्चों को पूछने, बताने और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, सुई को छूने एवं अंकों पर फिराने का अवसर दिया। बच्चों ने उसे छूने और घण्टे की सुई को गोल–गोल घुमाने में बहुत रुचि ली भले ही वे समय देखना न जानते हों।

नापने का फीताः बच्चों की ऊँचाई नापने के लिए एक कोने में नापने का फीता भी चिपका दिया गया था। बाद में बच्चों द्वारा इसका उपयोग अंक देखने एवं एक–दूसरे की ऊँचाई नापने के लिए होता था। जो बच्चे अंक नहीं भी पहचान पाते थे उन्हें भी इस फीते का अवलोकन करना रुचिकर लगता था।

उपलब्धियाँ

- बच्चे आत्मविश्वासी बने एवं खुद को दृढ़ता से व्यक्त करने लगे।
- बच्चों ने हिन्दी व अँग्रेजी दोनों कविताओं के शब्दों व अभिनय को काफी आसानी से सीखा। साल के अन्त तक वे हिन्दी की 18 और अँग्रेजी की 12 कविताओं का पाठ करने लगे थे।
- बच्चों ने गणित की अधिकांश अवधारणाएँ तथा अँग्रेजी शब्द सीख लिए। इसके अलावा बच्चों ने बातचीत के लिए हिन्दी का प्रयोग करना शुरू कर दिया जो पहले उनकी मातृभाषा थी।
- बच्चों ने स्वयंमेव तारीखें लिखनी शुरू कर दीं।
- बच्चों ने घण्टों में समय बताना सीख लिया, कुछ तो घण्टों व मिनटों में भी समय बताने लगे।
- बच्चों को दिशा सम्बन्धी ज्ञान भी मिला।
- बच्चों ने कविता पाठ, लेखन व अवधारणाओं को समझने में एक–दूसरे की मदद की।
- हमने बच्चों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किए जो बहुत लाभदायक रहा।
- बच्चों ने साथ–साथ सीखा तथा हमने भी उनके साथ सहजता महसूस की।

चुनौतियाँ

अब हमारे 75 यहाँ से भी अधिक विद्यार्थियों का नामांकन हो चुका है। हमारी गतिविधियों और खेलों के लिए जगह छोटी पड़ने लगी है। अब हमें अपने पास उपलब्ध स्थान के भीतर ही गतिविधियों व अधिगम के परिचय के लिए नए तरीकों के बारे में सोचना होगा। बच्चे और उनकी ऊर्जा ही हमारी प्रेरणा हैं हालांकि हमें जगह की कमी महसूस होती है खासकर तब जब किसी खेल का आयोजन करना हो।

सुरेन्द्र कुन्तल अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मांडवा, सिरोही, राजस्थान में फरवरी 2012 से अँग्रेजी के शिक्षक हैं। इसके पहले वे चार साल तक प्रतिष्ठित स्कूलों में सीनियर कक्षाओं को पढ़ा चुके हैं। उन्हें पढ़ना, बैडमिंटन खेलना और मित्रों के साथ आराम से समय बिताना पसन्द है। उनका मानना है कि वे लगातार प्रयास करके अपने लिए नियत किए गए लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। उनसे surendra.kuntal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल